राष्ट्रीय आन्दोलन और बिहार के पत्र–पत्रिकाएँ 1857–1947

अनुप कुमार

राष्ट्रीय आंदोलन में बिहार के पत्र–पत्रिकाओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। संपादकीय टिप्पणियाँ बेबाक, बेखौफ और बेलोच होती थी। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध बिगुल बजने लगा। अखबारों ने मातृभूमि को स्वतंत्र कराने में देश के लोगों में अपूर्व साहस, प्रेरणा और देशभक्ति की भावना को जागृत किया। बिहारियों ने राष्ट्रीय आंदोलन के प्रत्येक चरण में बढ़–चढ़कर भाग लिया। बिहार के तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं ने उन्हें काफी प्रभावित और उत्प्रेरित किया। बिहार की राजनैतिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक उपलब्धि सनातन है। इसने राजतंत्र, गणतंत्र, जैन धर्म और बौद्ध धर्म को उद्‌भूत कर समस्त भारतवर्ष को एक झंडे के नीचे एकत्र करने का प्रयास किया है। साथ ही अंग्रेजी पराधीनता के विरोध में राष्ट्रीय आंदोलन को जन्म देने का श्रेय भी इसी प्रदेश को प्राप्त है। अंग्रेजी साम्राज्यवादी व्यवस्था से लोहा लेने वाले संघर्षों में भी बिहार आगे रहा है। इस धरती की यह विशेषता है कि इसने पराधीनता को कभी बर्दाश्त नहीं किया है, अत्याचार करने वाले साम्राज्यवादियों को ललकारा है और उनके शोषण तथा अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई है। चाहे चम्पारण में नीलहों के अत्याचार से ऊबी जनता को त्राण दिलाने का मुद्‌दा हो, या रौलेट एक्ट का विरोध। ऐसे राष्ट्रीय प्रश्नों पर बिहार का संवेदनशील जनमानस जागरूक हो उठा था। उसने बर्बर सरकार के अत्याचार से अपने को रक्तरंजित बनाना मंजूर किया, पर जुल्मों के आगे घुटने टेकना नहीं जाना।